श्री नारायण नामावळि स्तोत्रं

श्री नारायण नामावळि स्तोत्रं

नारायणाय शुद्धाय शाश्वताय ध्रुवाय च |
भूतभव्यभवेशाय शिवाय शिवमूर्तये || 1 ||

शिवयोनेः शिवाद्यायि शिवपूज्यतमाय च |
घोररूपाय महते युगांतकरणाय च || 2 ||

विश्वाय विश्वदेवाय विश्वेशाय महात्मने |
सहस्रोदरपादाय सहस्रनयनाय च || 3 ||

सहस्रबाहवे चैव सहस्रवदनाय च |
शुचिश्रवाय महते ऋतुसंवत्सराय च || 4 ||

ऋग्यजुःसामवक्त्राय अथर्वशिरसे नमः |
हृषीकेशाय कृष्णाय द्रुहिणोरुक्रमाय च || 5 ||

बृहद्भेगाय ताक्ष्र्याय वराहायैकशृंगिणे |
शिपिविष्टाय सत्याय हरयेऽथ शिखंडिने || 6 ||

हुताशायोर्ध्ववक्त्राय रौद्रानीकाय साधवे |
सिंधवे सिंधुवर्षघ्ने देवानां सिंधवे नमः || 7 ||

गरुत्मते त्रिनेत्राय सुधर्माय वृषाकृते |
सम्राडुग्रे संकृतये विरजे संभवे भवे || 8 ||

वृषाय वृषरूपाय विभवे भूर्भुवाय च |
दीप्तसृष्टाय यज्ञाय स्थिराय स्थविराय च || 9 ||

अच्युताय तुषाराय वीराय च समाय च |
जिष्णवे पुरुहूताय वसिष्ठाय वराय च || 10 ||

सत्येशाय सुरेशाय हरयेऽथ शिखंडिने |
बर्हिषाय वरेण्याय वसवे विश्ववेधसे || 11 ||

किरीटिने सुकेशाय वासुदेवाय शुष्मिणे |
बृहदुक्थ्यसुषेणाय युग्मे दुंदुभये तथा || 12 ||

भयेसखाय विभवे भरद्वाजेऽभयाय च |
भास्कराय च चंद्राय पद्मनाभाय भूरिणे || 13 ||

पुनर्वसुभृतत्वाय जीवप्रभविषाय च |
वषट्काराय स्वाहाय स्वधाय निधनाय च || 14 ||

ऋचे च यजुषे साम्ने त्रैलोक्यपतये नमः |
श्रीपद्मायात्मसदृशे धरणीधारणे परे || 15 ||

सौम्यासौम्यस्वरूपाय सौम्ये सुमनसे नमः |
विश्वाय च सुविश्वाय विश्वरूपधराय च || 16 ||

केशवाय सुकेशाय रश्मिकेशाय भूरिणे |
हिरण्यगर्भाय नमः सौम्याय वृषरूपिणे || 17 ||

नारायणाग्र्यवपुषे पुरुहूताय वज्रिणे |
वर्मिणे वृषसेनाय धर्मसेनाय रोधसे || 18 ||

मुनये ज्वरमुक्तायि ज्वराधिपतये नमः |
अनेत्राय त्रिनेत्राय पिंगळाय विडूर्मिणे || 19 ||

तपोब्रह्मनिधानाय युगपर्यायिणे नमः |
शरणाय शरण्याय भक्तेष्टशरणाय च || 20 ||

नमः सर्वभवेशाय भूतभव्यभवाय च |
पाहि मां देवदेवेश कोऽप्यजोऽसि सनातनः || 21 ||

एवं गतोऽस्मि शरणं शरण्यं ब्रह्मयोनिनां |
स्तव्यं स्तवं स्तुतवतस्तत्तमो मे प्रणश्यत || 23 ||

इति श्रीमन्महाभारते अनुशासनपर्वणि द्विचत्वारिंशोऽध्याये श्री नारायण नामावळि स्तोत्रं |